सिक्किम विश्वविद्यालय

क्रॉनिकल

भाग ३, अंक २ | मई २०१५ | www.cus.ac.in

सम्पादकीय

प्रिय मित्रों,

प्रकृति के भयंकर रोष के तीन सप्ताह बीत चुके हैं और इस भारी त्रासदी के परिणाम स्वरूप काठमांडू और सैकड़ों कस्बे और गाँव टूट कर रह गए। हमारी सहानुभूति उन सभी लोगों के लिए है जिन्होंने इस भयंकर भूकंप में अपना जीवन खो दिया है और भूकंप से प्रभावित हैं। इस भूकंप से सिक्किम में तथा भूकंप महसूस करने वाली सभी जगहों में भी सामान्य जीवन अस्थिर हुआ है। घबराहट के बावजूद विश्वविद्यालय अपना कार्य करता रहा और अपनी निर्धारित गतिविधियों को अंजाम दिया। इसमें सेमिनार और सम्मेलनों में भाग लेने के लिए देश भर से आनेवाले विद्वानों की गतिविधियां शामिल हैं। प्रबंधन विभाग और मानव विज्ञान विभाग में आयोजित रोमांचक कार्यक्रमों के साथ नियमित रूप से कक्षाएँ चल रही थीं। इस अंक में उन बैठकों, कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट है जो ताजी सूचनाओं से पूर्ण तथा रचनात्मक लेखनों का मिश्रण रहे हैं। हम आने वाले अंकों में विभिन्न शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक विभागों से इस समाचार पत्र में अधिक से अधिक भागीदारी की आशा करते हैं।

आपकी,

जैस्मीन यिमचुंगर

'सिक्किम की सांस्कृतिक विरासत' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

25 अप्रैल 2015 को उदघाटन समारोह में, दाएं से बाएंरू प्रोफेसर वी.के. श्रीवास्तव (विभागाध्यक्ष मानवशास्त्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, उद्घाटन वक्ता), प्रोफेसर एस.के. चौधरी (निदेशक, आईजीआरएमएस), श्री गर्जमान गुरुंग (माननीय मंत्री, सांस्कृतिक विरासत), प्रोफेसर टी.बी सुब्बा (माननीय कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय), श्री टी के कौल (कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय), प्रोफेसर एस. मैती (संयोजक–सचिव और डीन, मानव विज्ञान, सिक्किम विश्वविद्यालय), डॉ. के.आर. आर. मोहन अप्रैल (विभागाध्यक्ष,

मानवशास्त्र विभाग ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से 25 अप्रैल से 27 अप्रैल 2015 तक तीन दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन के आयोजन स्थल नामग्याल तिब्बत्तीय संस्थान, गंगटोक था। उक्त दिनों के दौरान अस्थिर मौसम तथा लगातार छोटे –छोटे भूकंप आते रहने की स्थिति के बावजूद ध्यान से सुननेवाले दर्शकों को बाधित करते हुए भी यह सम्मेलन चलता रहा। उद्घाटन सत्र में प्रो. समीरा मैती, सम्मेलन के संयोजक सचिव और डीन, मानव विज्ञान विद्यापीठ ने 'संस्कृति विरासत' शीर्षक विषय का परिचय दिया और उन्होंने सिक्किम के संदर्भ में विषय की तत्काल आवश्यकता और महत्व के बारे में विस्तार से बताया। प्रो सरित चौधरी, निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल ने भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में आईजीआरएमएस के मिशन के बारे में दर्शकों को संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने सिक्किम विश्वविद्यालय के साथ संरक्षण तकनीकों और संग्रहालय विज्ञान में युवा पेशेवरों के लिए अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के संचालन करने के लिए भी इच्छा व्यक्त की है। समारोह के मुख्य अतिथि श्री गर्जमान गुरुङ, मंत्री, सांस्कृतिक मामले, सिक्किम सरकार ने सम्मेलन के आयोजन करने के प्रयासों की तारीफ करते हुए प्रतिनिधियों को अपने निष्कर्षों और सुझावों को साझा करने के लिए अपील की है, ताकि इन सुझावों को नीति तैयार करने तथा सिक्किम की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में सकारात्मक रूप से प्रयोग किया जा सके। प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव, अध्यक्ष, मानवशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने 'प्रकृति एवं संस्कृति : विरासती मानवशास्त्र में कुछ मुद्दे' विषय पर अपने उदघाटन भाषण में, मत प्रकट किया है कि सांस्कृतिक विरासत एक गतिशील प्रक्रिया है, क्योंकि लोगों के पास अपनी दैनिक जरूरतों एवं गतिविधिओं के अनुसार अपनी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने का विकल्प है। आगे उन्होंने कैसे समुदाय उनके सांस्कृतिक लक्षणों की अच्छी तरह से रक्षा की जा सके तथा उसकी निरंतरता बनाए रखी जा सके, इन मुद्दों को समझने के लिए सूक्ष्म और स्थूल दोनों स्तरों पर चर्चा करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस व्याख्यान की अध्यक्षता प्रो. टी. बी. सुब्बा, माननीय कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय ने की थी। यह उद्घाटन सत्र श्री टी. के. कौल, कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ। प्रो. टी.बी. सुब्बा, कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय ने 'सिक्किम की सांस्कृतिक विरासत' विषय पर एक घंटे का व्याख्यान दिया. प्रो. टी.बी. सुब्बा ने सांस्कृतिक विरासत की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए तथा इस क्षेत्र के विभिन्न सांस्कृतिक लक्षणों पर व्यापक रूप से चर्चा करते हुए सिक्किम के सामाजिक–सांस्कृतिक इतिहास पर संक्षिप्त किन्तु गंभीर व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान के बाद एक जीवंत अंतर्कियात्मक सत्र हुआ। प्रो. एस.आर. मंडल, (उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय), प्रो. सुकान्त के. चौधुरी (लखनऊ विश्वविद्यालय), प्रो. मैत्रेयी चौधुरी (उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय)य डॉ. अन्ना बालिकसि– डेनजोंगपा (नामग्याल तिब्बतीय संस्थान); डॉ. संजुक्ता सत्तर (मुंबई विश्वविद्यालय) और सुश्री पौरियांगथानलिउ (जामिया मिलिया इसलामिया) जैसे प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा और छरू व्याख्यान दिए गए। विद्वानों ने वैश्विक तथा स्थानीय दोनों स्तरों पर विचार करते हुए सम्मेलन के विषय से संबन्धित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। विशेष व्याख्यान के अलावा आठ तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिनमें सिक्किम की सांस्कृतिक विरासत से संबन्धित विभिन्न विषयों पर कुल 37 पेपर प्रस्तुत किए गए। समापन सत्र में समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. टी.बी. सुब्बा के हाथों से प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। अपने संबोधन में उन्होंने विश्वविद्यालय में एक संग्रहालय की स्थापना करके भविष्य की पीढ़ी के लिए सिक्किम के अद्वितीय सांस्कृतिक पहलुओं को संरक्षित करने के लिए सिक्किम विश्वविद्यालय के प्रयास पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के संयोजक सचिव प्रो. समीरा मैती के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

इस अंक में

सम्पादकीय Page 1

'सिक्किम की सांस्कृतिक विरासत' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन Page 1

टप्रैल 2015 के दौरान एनएसएस की गतिविधियां Page 2

''भारत के लोगों'' के प्रदर्शनी Page 2

सेमिनार एवं कार्यशाला Page 2

जुवेनिस 2015 Page 3

Upcoming Events & Seminars

May 22-23, 2015: International Conference on "Engendering Democracy in South Asia: Issues & Challenges"

Organised by
Department of Political Science
School of Social Sciences
Sikkim University,

June 25-26, 2015: International Conference on "India's Northeast and Beyond: Challenges and Opportunitie"

Organized by
Department of Peace and Conflict Studies and Management,
School of Social Sciences,
Sikkim University

In joint collaboration with
ICWA and ICSSR, New Delhi

For Details: Log on to **www.cus.ac.in**

Layout & Design by:
Dorjee Sherpa Pinasa
Department of Mass Communication

Mailing Address
suchronicle@cus.ac.in

प्रकाशन

डॉ सेबेस्टियन एन, सहायक प्राध्यापक, अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग, 'इस्लामी आंदोलन, लोकतंत्र के साथ मुठभेड़ रू फ्रंट इस्लामिक डू सलूट (एफआईएस) एवं अल्जीरिया में लोकतान्त्रिक प्रयोग' इंडिया क्वार्टर्ली (सेज) खंड 71, सं. 3, जुलाई–सितंबर 2015।

अप्रैल 2015 के दौरान एनएसएस की गतिविधियां

दिनांक 4 अप्रैल 2015 को बाराद सदन, 5 माइल में सुबह 9.30 बजे पश्चिम बंगाल के योग विद्या प्राणिक हीलिंग फाउंडेशन की ओर से सुश्री शीतल झुनझुनवाला और श्री अर्कदेव भट्टाचार्य द्वारा 'ध्यान और तनाव प्रबंधन' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। संकाय सदस्यों और छात्रों ने इस व्याख्यान में भाग लिया और दुगुने मन से ध्यान लगाना सीखा। वक्ताओं ने दर्शकों को प्राणिक चिकित्सा पर पाठ्यक्रम के बारें में जानकारी दी, जो एक स्पर्श रहित चिकित्सा है और व्यापक रूप से डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, एथलीटों आदि द्वारा 120 देशों में प्रचलित है।

11 अप्रैल 2015 को सुबह 9.30 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक उद्यानिकी विभाग में सफाई अभियान का आयोजन किया गया था। विभाग के संकाय सदस्य और प्रयोगशाला अटेंडेंट श्री दिनेश राई सहित बीएससी द्वितीय, चतुर्थ एवं छठे सेमेस्टर के साठ छात्रों ने सभी कक्षाओं, संकाय कक्षों, प्रयोगशालाओं आदि की सफाई में भाग लिया।

19 अप्रैल 2015 को दोपहर 12.30 बजे एनएसएस प्रकोष्ठ के द्वारा केन्द्रीय पुस्तकालय में एक सफाई अभियान का आयोजन किया गया था। डॉ. सुजाता उपाध्याय, कार्यक्रम संयोजक, डॉ. जिगमी डबल्यू. भूटिया, कार्यक्रम अधिकारी एवं डॉ. सुभाष मिश्रा, कार्यक्रम अधिकारी तथा मानवशास्त्र विभाग, रसायन विज्ञान विभाग, चीनी विभाग, उद्यानिकी, विधि, शांति एवं द्वंद्व अध्ययन एवं मनोविज्ञान विभाग के 12 छात्रों ने पूरे पुस्तकालय क्षेत्र की सफाई में भाग लिया। छात्र स्वयंसेवकों ने भी कचरे के डिब्बों के उपयोग पर तथा पुस्तकालय के सामने कोई पोस्टर नहीं चिपकाने के लिए संदेश चिपकाया।

टीसीएस ने 18 मार्च से 24 मार्च 2015 तक तीस्ता छात्रावास, गंगटोक में एक रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कुल 122 छात्रों को टीसीएस से प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र प्राप्त हुआ। पाठ्यक्रम प्रशिक्षक श्री इंद्रनील पक्राशी ने छात्रों के लिए साक्षात्कार कौशल, संचार कौशल, वाद–विवाद, समूह चर्चा, बायोडाटा प्रस्तुतीकरण

सेमिनार एवं कार्यशाला

जयंत बर्मन, सहायक प्राध्यापक, संगीत विभाग ने दिनांक 27 मार्च 2015 को रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता द्वारा 'मानव मन एवं समाज पर वाद्ययंत्रीय संगीत का प्रभाव' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में 'उत्तरबंग के लोक वाद्ययंत्र दोतारा रू सांस्कृतिक विशेषता एवं लोकजीवन पर उसका प्रभाव' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

जयंत बर्मन, सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग ने 25 अप्रैल से 27 अप्रैल 2015 तक नामग्याल प्रौद्योगिकी संस्थान, देवराली, गंगटोक, सिक्किम में मानवशास्त्र विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल द्वारा 'सिक्किम की सांस्कृतिक विरासत' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'सिक्किम में लिम्बू के सांगीतिक वाद्ययंत्र' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

बलराम पांडेय, सहायक प्राध्यापक, नेपाली विभाग ने 11 अप्रैल से 12 अप्रैल 2015 तक भारत–नेपाल जनमैत्री सांस्कृतिक मंच, कोलकाता द्वारा आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय नेपाली साहित्य संगोष्ठी में 'भारत में नेपाली साहित्य और पठन–पाठन' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

समीरा मैती, प्रोफेसर, मानवशास्त्र विभाग ने सह लेखक डॉ स्वाति अक्षय सचदेवा के साथ 25–27 अप्रैल 2015 तक मानव शास्त्र विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय तथा आईजीआरएमएएस, भोपाल द्वारा शसिक्किम की सांस्कृतिक विरासतश पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जेंडरिंग मोनास्टीसिज्म : सिक्किम की एक केस स्टडी' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

के.आर. राम मोहन, सह प्राध्यापक, मानवशास्त्र विभाग ने 19–20 मार्च 2015 तक मानवशास्त्र विभाग और भारत के मानव विज्ञान सर्वेक्षण, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय द्वारा 'मानव शास्त्र में नए मानदंड' विषय पर आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन में 'आजीविका की खोज में अनुसूचित जनजातियों के बीच आंतरिक प्रवास रू विशाखापट्टनम जिले की एक केस स्टडी' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

करिश्मा के. लेपचा, सहायक प्राध्यापक, मानवशास्त्र विभाग ने 17–18 अप्रैल तक यूनाइटेड थियोलॉजिकल कॉलेज, बैंग्लोर के मेजवानी से तथा नॉलेज एक्स्चेंज रिसर्च फंड (एडिनबर्ग विश्वविद्यालय एवं लैनकेस्टर विश्वविद्यालय, यूके) के संयुक्त वित्त पोषण से 'भारत में ईसाई धर्म और नागरिकता रू इतिहास, संस्कृति और शक्ति से संघर्ष' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में 'लेपचा ईसाई बनाम ईसाई लेपचा के बीच वार्ता' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया।

''भारत के लोगों'' की प्रदर्शनी

मानव शास्त्र विभाग ने भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता के सहयोग से 22 अप्रैल से 26 अप्रैल तक मानव शास्त्र विभाग में 'भारत के लोगों' पर एक 6 दिवसीय फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया।

सिक्किम में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के 'गतिमान संग्रहालय' के बेनर तले इस तरह के प्रदर्शनी सिक्किम में पहली बार हुआ है। इस प्रदर्शनी में आदमी के मूल से संबन्धित विभिन्न पहलुओं, पूरे भारत के पुरातात्विक स्थलों तथा पूरे भारत के संप्रदायों के सांस्कृतिक चित्रों को दर्शाया गया है। 'गतिमान संग्रहालय' का मुख्य उद्देश्य भारत के इतिहास और संस्कृतियों की एक बुनियादी समझ विकसित करना है।

प्रदर्शनी का उदघाटन माननीय कुलपति प्रो. टी. बी. सुब्बा और श्री एम टी शेर्पा, निदेशक, उच्च शिक्षा सिक्किम सरकार द्वारा किया गया।

उद्घाटन समारोह के उद्घाटन सत्र में मानव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ के.आर. राम मोहन ने सिक्किम विश्वविद्यालय को चयनित करने के लिए भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण, कोलकाता को धन्यवाद

आदि पर सत्र का आयोजन किया था।

दो छात्राओं – सुश्री सुमन प्रधान, यूजी अंतिम सेमेस्टर, मनोविज्ञान विभाग और सुश्री किरण छेत्री, यूजी अंतिम सेमेस्टर, बागवानी विभाग को अप्रैल में आयोजित एक लिखित परीक्षा, साक्षात्कार के एक एचआर राउंड और दो टेलिफोनिक साक्षात्कारों के द्वारा एक चयन प्रक्रिया के माध्यम से टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस, कोलकाता द्वारा चयनित किया गया है। उपरोक्त छात्राओं को अपने पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद अगस्त 2015 में टीसीएस, कोलकाता में कार्यग्रहण करना होगा।

ज्ञापन किया, और डॉ. रोशिमा गोवलूग, अधीक्षण मानव विज्ञानी, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग को उनकी उपयुक्त समन्वय के लिए विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ बी. एन. सरकार, अधीक्षण मानवविज्ञानी, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षणय कोलकाताय विशिष्ट अतिथि, श्री एम. टी. शेर्पा, श्री सोनम लेप्चा, संयुक्त निदेशक, एचआरडीडी, सिक्किम सरकार, प्रो. समीरा मैती, डीन, मानव विज्ञान विद्यापीठ, सभी ने इस प्रदर्शनी के महत्व एवं विस्तार पर प्रकाश डाला।

प्रो. टी. बी. सुब्बा, कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय ने भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता द्वारा शुरू की गई परियोजना 'भारत के लोगों' की उत्पत्ति के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने घोषणा की, कि भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने सिक्किम विश्वविद्यालय में फील्ड स्टेशन शुरू करने के लिए प्रस्ताव दिया है. उन्होंने आगे कहा कि सिक्किम विश्वविद्यालय में मानव शास्त्र विभाग और इतिहास के विभाग की अगुआई में एक संग्रहालय स्थापित करने का कार्य प्रक्रियाधीन है।

श्री टी. के कौल, कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय ने भी आशा व्यक्त की, कि यह प्रदर्शनी भारत के पूर्व के इतिहास के बारे में छात्रों की समझ को समृद्ध केरेगी।

अंत में, डॉ. रोशीना गोवलूग, अधीक्षण मानवविज्ञानी, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग ने आभार व्यक्त किया। उन्होंने सिक्किम विश्वविद्यालय, सिक्किम विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों और छात्रों तथा भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के कर्मचारियों को धन्यवाद प्रदान किया.।

प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय से और विश्वविद्यालय के बाहर से बहुत लोग आए थे।

Twin Jottings

JAYITA SENGUPTA
Associate Professor
Department of English

"Arghyo" (offering)

you will remain in my memory forever
like some distant dream

like a storm unleashing the fragrance of a blue rose
like a melody which brims the heart with thankfulness

you will remain in my memory forever
as the light cracking through the heart of darkness

like the silence that robs me of all words ...

Song of the road

"And then?" she had asked, coming to the end of the road …
"So this was what the journey all about?" The sky by that time inflamed
with red sang out a tune of parting and betrayal …
A red veil of shame cast a shadow on earth …
like those barren branches without cover,
she shivered reaching for the red veil of the sky …
a pale haze of anguish burned on the hills in the distance bursting into
a flame of conflagration -
the flames leapt, licking her body with anger and desire
scalding, bleaching, searing pain dug into her flesh and even her burning soul …
but the darkening sky with the invasion of the night
whispered a song of love
blanketing her from lures of nature, offering a prayer for her salvation …
a curtain of stars popped out of the inky blanket one by one
to receive her ….
they draped her in the starry clothes of blue and white and white and gold …

All this while he just stood at a distance watching her …
like some Tiresias unable to embrace or hold her hand …
for he was turned cold as a stone …
"Ah well think not of the end, for the journey was my song offering to you"
his voice melted into the harshness of the mountain winds grazing the earth, embracing the night.

जुवेनिस 2015

17 अप्रैल 2015 को आयोजित प्रबंधन उत्सव में छात्रों का उत्साह नजर आया। जुवेनिस 2015 प्रतियोगिता, आनंद और सीखने के अनुभव के मिश्रण के रूप में सामने आई। प्रबंधन उत्सव सफलतापूर्वक विभिन्न कॉलेजों के प्रतिनिधित्व से प्रबंधन/वाणिज्य के 92 छात्रों की एक प्रभावशाली भागीदारी के साथ आयोजित किया गया। माननीय उप कुलपति प्रो. टी. बी. सुब्बा, गणमान्य मुख्य अतिथि श्री अजीत सिंह, जी. एम. मानव संसाधन एवं प्रशासन, ज्यडस कादिल्ला, श्री टी.के. कौल, कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय की उपस्थिति ने समारोह की शोभा बढ़ाई। प्रबंधन को कक्षा की चार दीवारी के बीच के बजाय अभ्यास से बेहतर सीखा जा सकता है। प्रबंधन उत्सव छात्रों और प्रतिभागियों दोनों के लिए सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए सही मंच रहा। जुवेनिज 2015 में चार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। 'इवैंट 1 – विज्ञापन निर्माण प्रदर्शनी' में दस टीमों की भागीदारी देखी गई थीं, प्रत्येक टीम में चार सदस्य शामिल थे। प्रतिभागियों ने उनकी रचनात्मकता, विज्ञापन डिजाइन और विज्ञापन प्रस्तुति कौशल का प्रदर्शन किया। 'इवैंट 2 – व्यापार का प्रस्ताव' में दो टीमों ने उभरते उद्यमियों के कौशल और प्रतिभा का प्रदर्शन किया। 'इवैंट 3– बिजनेस क्विज' में 12 टीमों की प्रभावशाली भागीदारी रही, जिसका ज्ञान का परीक्षण कॉर्पोरेट दुनिया में नवीनतम घटनाओं, व्यापार की घटनाओं, सीईओ आदि पर किया गया था। 9 प्रतिभागियों ने 'अंतिम उत्तरजीवी कार्यक्रम' में होशियारी, विश्वास, भावनात्मक स्थिरता और बिक्री कौशलों का प्रदर्शन किया। यह कार्यक्रम एक समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ। श्री नीरज भट्ट, एजीएम, टोरेंट फार्मा और डॉ. ए. एन. शंकर, डीन, व्यावसायिक अध्ययन विद्यापीठ ने समारोह की शोभा बढ़ाई और जीतनेवालों को ट्राफियां और प्रमाण पत्र वितरित किए।